खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 158-159
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.25
SJIF (2021) : 7.247

A unique effort of plant biodiversity conservation in IFFCO Amla factory premises

Mahendra Pratap Singh
Indian Forest Services (Retd.)
58, Block-H, South City, Lucknow-226 025, U.P., India
mahendrapratapsingh1960@gmail.com

Received: 04-06-2022, Accepted: 22-09-2022

Abstract- Biodiversity conservation is the prime demand of modern times. Many seminars and symposia are regularly organized on world Biodiversity day. There is a need of serious efforts in conservation of local species which are at the verse of extinction. Present article deals with noble and unique effort which has been done to conserve more than 100 species in the premises of IFFCO Amla factory, Bareilly. Description of these are given in this article.

Key words- Biodiversity, Biodiversity conservation, world Biodiversity day, IFFCO Amla factory Bareilly

इफको आंवला संयंत्र परिसर में वानस्पतिक जैव विविधता संरक्षण का अनूठा प्रयास

महेन्द्र प्रताप सिंह
भारतीय वनसेवा (सेवानिवृत्त)
58, ब्लॉक–एच, साउथ सिटी, लखनऊ–226 002, उ0प्र0, भारत
mahendrapratapsingh1960@gmail.com

सार– जैव–विविधता संरक्षण आज की प्रमुख समस्या है। अनेक अवसरों मुख्यतः विश्व जैव विविधता दिवस (22 मई) पर अनेक गोष्ठियां एवं सेमिनार आयोजित किए जाते हैं। मैंने अनुभव किया कि लुप्त हो रही प्रजातियों मुख्यतः स्थानीय प्रजातियों के संरक्षण के लिये गम्भीर प्रयास किया जाना चाहिये। ऐसा एक प्रयास इफको ऑवला फैक्ट्री बरेली में किया गया है। यहॉ 100 से अधिक प्रजातियां संरक्षित की गई हैं। जिसका उल्लेख इस आलेख में किया गया है।

बीज शब्द–जैव विविधता, जैव विविधता संरक्षण, विश्व जैव विविधता दिवस, इफको फैक्ट्री आंवला बरेली।

1. **परिचय**– जैव विविधता संरक्षण एवं लुप्त प्राय वनस्पतियों के संरक्षण की बात तो अनेक मंचों से की जाती है किन्तु व्यावहारिक रूप से उनके संरक्षण का कार्य पूर्णतः उपेक्षित है। यद्यपि लखनऊ के आसपास के कई मन्दिर परिसरों में मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से अपने संसाधनों द्वारा इस दिशा में प्रयास किया गया[1] तथा रोपण सफल भी रहा किन्तु वह बहुत छोटे स्तर पर था। इससे मुझे सन्तुष्टि नहीं मिलती थी। मेरी इच्छा अपेक्षाकृत बड़े स्तर पर कार्य कराने की थी।

वृक्षारोपण के सम्बन्ध में मेरा अनुभव है कि यद्यपि प्रतिवर्ष व्यापक रूप से वृक्षारोपण किया जाता है किन्तु उनके रखरखाव पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता। मेरे मन में लुप्त प्राय वनस्पतियों के स्थापित करने विचार था। अर्थात् वृक्षारोपण कर उसका रख रखाव तब तक किया जाना था जबतक कि वह स्थापित न हो जाय। मैंने अनुभव किया कि बड़े स्तर पर यह कार्य किसी संस्था के सहयोग के बिना नहीं कराया जा सकता। मैं ऐसी किसी संस्था की खोज में था।

2. **मूल प्रयास**– मेरी यह इच्छा शीघ्र ही पूरी हो गयी। इफको की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयन्ती वर्ष में उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जनपद में मैगलगंज नामक स्थान पर 13 सितम्बर 2017 में स्थानीय किसानों की एक बड़ी सभा आयोजित की गई थी। उस सभा में इफको के प्रबंध निदेशक आदरणीय श्री उदय शंकर अवस्थी जी भी आये थे। प्रबन्ध निदेशक महोदय की अनुमति से उस सभा में मुझे अपनी बात रखने का अवसर मिला। मेरे द्वारा उस विशाल सभा में लुप्त हो रही प्रजातियों जैसे–देशी आम, महुआ, कैथा, बड़हल, खिरनी, लसोड़ा, इमली एवं इस प्रकार की अन्य प्रजातियों के रोपण के महत्व को रेखांकित किया गया। मेरे द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि देशी आम, महुआ, जामुन, आमरा, कैथा, बड़हल, खिरनी, लसोड़ा, इमली एवं इस प्रकार की अन्य प्रजातियाँ पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से तो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं ही, इनके फल भी अत्यन्त लाभप्रद हैं। यह प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं। इन्हें प्रायः लोग नहीं लगाते क्योंकि एक तो यह अधिक समय में तैयार होती हैं तथा दूसरे इनसे तत्काल कोई आर्थिक लाभ नही है। इस कारण इन प्रजातियों का रख रखाव

अब नहीं हो पा रहा है और यदि इनके संरक्षण पर पर्याप्त ध्यान न दिया गया तो ये प्रजातियाँ लुप्तप्राय होने की स्थिति में हैं। किसी भी प्रजाति का लुप्त होना पीड़ा दायी है।
प्रबन्ध निदेशक महोदय ने मेरी बातें ध्यान से सुनी। मैं उनकी संवेदनशीलता एवं प्रत्युत्पन्नमति के लिये उन्हें नमन करता हूँ कि तत्काल निर्णय लेते हुये सभा में ही उन्होंने अवगत कराया कि बरेली जनपद के आंवला तहसील में इफको का विशाल संयंत्र स्थापित है। इसका विशाल परिसर है, जो रिक्त है। इस परिसर में लुप्त हो रही इन प्रजातियों का रोपण कराया जा सकता है। उन्होंने उस सभा में ही मुझसे इसकी मौखिक सहमति चाही। मैंने तत्काल खड़े होकर इसके लिये पूर्ण समर्पण एवं सहयोग का आश्वासन दिया। इस मौखिक सहमति के आधार पर मेरे मार्गदर्शन में लुप्तप्राय प्रजातियों के रोपण का कार्य प्रारम्भ कराया गया।

3. **इफको आंवला संयंत्र परिसर में वानस्पतिक जैव विविधता संरक्षण के लिए उठाये गये कदम**– यह कार्य आसान नहीं था। पूरा क्षेत्र उसरीला था तथा इसका पीएच 9 से अधिक था। इस उसरीली भूमि पर लुप्त हो रही महत्वपूर्ण प्रजातियों का न केवल रोपण कराना था बल्कि उसकी सफलता सुनिश्चित करना था। मेरे द्वारा इस चुनौती को स्वीकार किया गया। इफको के विपणन निदेशक श्री योगेन्द्र कुमार जी को सारी स्थिति से अवगत कराया। उनके द्वारा कार्य में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया गया तथा कार्य 2017 से ही आरम्भ कराया गया। क्षेत्र उसरीला हाने के कारण इसमें अर्थआगर से 1.20 मीटर गहरा गड्ढा खुदवाया गया तथा इसमें पर्याप्त मात्रा में जिप्सम, गोबर की खाद एवं बालू मिलवाई गई। अधिकतर क्षेत्रों में सिंचाई हेतु पाइप लाइन थी, जहाँ पर नहीं थी, वहाँ इफको आंवला फैक्ट्री के अधिकारियों के सहयोग से पाइप लाइन डलवाई गई। इस प्रकार रोपित क्षेत्र की सिंचाई की पूरी व्यवस्था की गई। पूर्ण तैयारी के उपरान्त वर्षाकाल 2018 में रोपण कार्य कराया गया।

इसकी पर्याप्त सिंचाई करायी जाती रही। मार्च से जून तक सिंचाई का विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्र उसरीला होने के कारण पौधों में आवश्यकतानुसार धान की भूसी भी डलवाई गई। वर्तमान में क्षेत्र 100 से अधिक प्रजातियों के कुल 7500 से अधिक वृक्ष हैं। अभी भी क्षेत्र की तन्मयता से देख रेख की जा रही है।

4. **निष्कर्ष**– यह वृक्षारोपण पूर्णतः सफल है और शीघ्र ही स्थापित होने की स्थिति में हैं। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण वृक्षारोपण की सफलता अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। आज से बीस पच्चीस वर्श बाद देशी आम, महुआ, कैथा, बड़हल, आमरा, खिरनी, लसोड़ा, इमली, बहेड़ा, जामुन, सिन्दूर, गोरख इमली, बरगद आदि दुर्लभ प्रजातियों के विशल वृक्ष इस परिसर में मिलेंगे जो आगामी पीढ़ी को एक अनमोल धरोहर होगी।

वर्ष 2022 जून तक इस क्षेत्र में लसोड़ा, इमली, अमरूद, शहतूत, गूलर एवं जंगल जलेबी आदि में फल आने लगे हैं। (**चित्र–1**)

References

1.Singh, Mahendra Pratap (2020) Environmental development of pilgrimage at the bank of rivers, Anusandhan Vigyan Shodh Patrika, Vol. 8, No. 1, 2020, pp. 155-159
DOI: 10.22445/avsp.v8i1.25

चित्र–1: लसोड़ा का फल से लदा वृक्ष